



आरती श्री संतोषी माता



जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
अपने सेवक जन को सुख सम्पत्ति दाता ॥

सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों ।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों ॥ जय०

गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय०

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर दुरे प्यारे ।
धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरे न्यारे ॥ जय०

गुड़ अरु चना परमप्रिय तामें संतोष कियो ।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥ जय०

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ॥ जय०

मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ॥ जय०

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसे हमारे, इच्छा फल दीजै ॥ जय०

दुखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किये ।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये ॥ जय०

ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवणकर, घर आनन्द आयो ॥ जय०

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे ॥ जय०

सन्तोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पत्ति, जी भरके पावे ॥ जय०